विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 10 : नई दिल्ली : 31 मई-06 जून 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शान्तिदूत, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण सानन्द सुखसातापूर्वक बेंगलुरु की ओर विहरण कर रहे हैं। पूज्यप्रवर की तमिलनाडु की यात्रा अब संपन्नता के अतिनिकट है। ७ जून को के.जी.एफ. में पूज्यप्रवर का कर्नाटक स्तरीय स्वागत समारोह समायोजित होगा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर २० जून को बेंगलुरु की सीमा में पधार जाएंगे। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में ३० जून को बेंगलुरु के भिक्षु धाम (भिक्षु भारती) में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष शुभारंभ समारोह का भव्य समायोजन होगा। वहां ३ जुलाई को दीक्षा समारोह भी आयोज्य है। जिसके लिए आचार्यप्रवर ने अब तक २० दीक्षाएं घोषित कर दी हैं। आचार्यप्रवर बेगलुरु के विभिन्न उपनगरों में विहरण करते हुए १२ जुलाई को आचार्यश्री तुलसी-महाप्रज्ञ चेतना-सेवाकेन्द्र में मंगल चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। बेंगलुरुवासी पूज्यप्रवर के चतुर्मास-प्रवास की तैयारी में निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं।

प्रेरक प्रवचन

जीवन्त व्यक्ति और जीवन्त इतिहास से प्रेरणा प्राप्त करें

(गत १५ मई को परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त प्रवचन हम सबके लिए प्रेरणास्पद है। प्रस्तुत है वह प्रवचन)

'हमारे जीवन में संगति का भी महत्त्व होता है। आदमी का ज्यादा सम्पर्क किसके साथ है, यह ध्यातव्य है। संगति का आदमी के मानस, व्यवहार, आचार और संस्कार पर असर पड़ सकता है। अच्छे की संगति आदमी को अच्छाई की ओर ले जा सकती है तो बुरे की संगति आदमी को बुराई की ओर जाने में सहायक बन सकती है। संतों में भी बहुत अच्छे संतों के पास रहने का मौका मिलता है तो अच्छी चीजें जीवन में आ सकती हैं। व्याख्यानी, ज्ञानी, आचार में विशेष जागरूक और व्यवहार कुशल साधु के पास रहने का मौका मिलता है तो उसका प्रभाव जीवन में आ सकता है। दूसरों की विशेषता को ग्रहण करने का समुचित प्रयास करना चाहिए। आचार्यों के पास रहने और सीखने का अवसर मिले तो उनसे भी कुछ ग्रहण करने, सीखने का प्रयास करना चाहिए।

कई संतों को परम पूज्य गुरुदेव के आसपास रहने का मौका मिला था। उनमें एक नाम मेरा भी लिया जा सकता है। मुझे परम पूज्य आचार्य तुलसी के चरणों में, उनके आसपास रहने का मौका मिला। बड़ों के पास रहकर यदि सलक्ष्य कुछ ग्रहण करने का प्रयास हो और बड़े भी सलक्ष्य कुछ देने का प्रयास करें तो अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है। मुझे कभी-कभी स्मृति हो जाती है कि गुरुदेव तुलसी ने मुझे अमुक स्थान पर, अमुक समय और अमुक मुद्रा में अमुक शिक्षा दी थी। कइयों को गुरुदेव का प्रवचन भी सुनने को मिला। उनकी कार्यशैली से भी अवगत होने का भी कइयों को मौका मिला होगा। विशिष्ट व्यक्तियों के पास रहने का मौका मिले तो उसका लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के पास भी उनके कई रूपों में और मेरे कई रूपों में मुझे रहने का मौका मिला। वे जब मुनि अवस्था में थे, तब भी मैंने उनको देखा। वे जब युवाचार्य थे, तब मुझे उनका अन्तरंग सहयोगी बना दिया गया। उसके बाद मुझे महाश्रमण के रूप में उनका सहयोगी बनाया गया। फिर वे आचार्य

बन गए तो मैं उनके युवाचार्य के रूप में भी रहा। इस प्रकार विभिन्न रूपों में मुझे आचार्य महाप्रज्ञजी की सन्निधि में रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। कभी मैं विद्यार्थी के रूप में उनके पास बैठता तो कभी मैं उनके प्रशासनिक कार्यों के सहयोगी के रूप में उनके पास बैठता और कभी मंत्रणा करने के रूप में उनके पास बैठता। आचार्य महाप्रज्ञजी के प्रवचन सुनने का भी हमें मौका मिला। बड़ों के सान्निध्य में रहने का मौका मिलना कुछ ग्रहण करने का एक सुन्दर अवसर होता है। अपने अग्रणी से भी अनेक चीजें सीखी जा सकती हैं।

हमने परम पूज्य आचार्य भिक्षु से परम पूज्य कालूगणी तक के आचार्यों को नहीं देखा, किन्तु इतिहास हमारे सामने है। पूर्ववर्ती आचार्यों के जीवनवृत्त को पढकर-समझकर अनेक बातें सीखी जा सकती हैं। जिन्हें समय मिले, वे आगम स्वाध्याय तो करें ही, उसके साथ आचार्यों का इतिहास, उनकी आत्मकथा, जीवनवृत्त आदि को भी पढने का प्रयास करें। साधु-साध्वियों का भी अपना इतिहास है। हमारे धर्मसंघ का इतिहास काफी अच्छा है, प्रेरणादायी है। कितने तपस्वी, कार्यकारी साधु-साध्वियां हुए हैं। समण-समणियां भी अपने ढंग से प्रयास करते हैं। श्रावक-श्राविकाओं का भी इतिहास है। उन्होंने भी कैसे सेवा की है, साधना की है, कार्य किया है। संस्थाओं का भी अपना इतिहास है और उनके कार्यकर्ताओं का भी अपना इतिहास है। इतिहास पठन संस्कार निर्माण और कुछ ग्रहण करने का एक माध्यम बन सकता है। उसके साथ व्याख्यान की सामग्री भी उससे एकत्रित हो सकती है। पुस्तक एक प्रकार की शिक्षक होती है। पुस्तक रूपी शिक्षक निर्जीव होते हुए भी प्रेरक बन सकता है। मुख्य बात है कि जीवन में हम कुछ प्राप्त करते रहें। जीवन्त व्यक्ति से भी प्राप्त किया जा सकता है और जो व्यक्ति जीवन्त नहीं रहा, उसके जीवन्त इतिहास से भी कुछ सीखा जा सकता है।

जो साधु-साध्वियां गुरुकुलवास में रहते हैं, उन्हें और ज्यादा सीखने का मौका मिल सकता है। अध्ययन का जो लाभ गुरुकुलवास में मिल सकता है, उतना बहिर्विहार में मिले अथवा न भी मिले। गुरुकुलवास में तो विभिन्न साधु-साध्वियां हैं। कोई में किसी विषय का ज्ञान है तो कोई में किसी अन्य विषय का ज्ञान है। अपने लिए जो विषय अपेक्षित है, उससे संबंधित साधु-साध्वियों से वह ज्ञान ग्रहण करने का मौका मिल सकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है स्वयं आचार्यप्रवर के सान्निध्य का लाभ मिल सकता है, उनसे भी कुछ ग्रहण किया जा सकता है। हम आचार्यों के इतिहास को देखें कि उन्होंने अपने शिष्यों को आचारी, संस्कारी और व्यवहारी बनाने के लिए किस प्रकार शिक्षण प्रदान किया, अनुशिष्टि भी प्रदान की।

हमारे साधु-साध्वियों में भी कई बहुत अच्छे संस्कारी, गहराई वाले मिल सकते हैं, जिनमें संघीय भावना है, जिनका स्वयं का जीवन भी अच्छा है, जो संघीय दृष्टि से सोचते है, ध्यान देते हैं, संघ के रीति-रीवाज को जानते भी हैं, समय पर उसे काम में भी लेते हैं, ऐसे संघनिष्ठ और व्यवहारनिष्ठ अच्छे साधु-साध्वियां होते हैं, वे संघ के लिए बहुत उपयोगी होते हैं और कोई-कोई तो शासन स्तम्भ बन जाता है।

हमारे धर्मसंघ में कई विशिष्ट संत हुए हैं, जिन्होंने आचार्यों, संतों, संघ की सेवा की है। मुनिश्री हेमराजजी स्वामी (सिरियारी) आचार्य भिक्षु के समय दीक्षित हुए। मुनिश्री जीतमलजी को उनके पास बारह वर्षों तक रहने का मौका मिला। वे हमारे धर्मसंघ में ख्यातनामा संत हैं। उनके पास रहने से मानों धर्मसंघ के भावी आचार्य (जयाचार्य) को भी कुछ सीखने, जानने का अवसर मिल गया, ऐसा अनुमान है। मुनिश्री हेमराजजी स्वामी को गुरुदेव तुलसी ने 'शासन महास्तम्भ' के रूप में संबोधित किया था। मैं मुनिश्री खेतसीजी स्वामी को याद कर रहा हूं। उनका जीवन कितना संस्कारी रहा। उन्हें 'सतयुगी' के नाम से याद किया जाता है। वे कलियुग में पैदा हुए, किन्तु उन्हें 'सतयुगी' विशेषण मिलना उनके जीवन के माहात्म्य को दर्शा रहा है। उनमें कैसी विनय भावना, संघीय भावना रही होगी। उनका उत्थान हुआ तो ऐसा हुआ कि भावी आचार्य की

नामावली में उनका नाम अंकित हो गया। यह उनके माहात्म्य का एक साक्ष्य है। हम वेणीरामजी स्वामी को भी याद करें। मंत्री मुनिश्री मगनलालजी स्वामी को मैंने अपनी आंखों से नहीं देखा, किन्तु उनकी बातें गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी से सुनते थे। हम मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) को भी याद कर लें, उनकी भी अपनी विशेषताएं थीं।

हमारे धर्मसंघ में कई साध्वियां भी विशिष्ट हुई हैं। महासती सरदारांजी हमारे धर्मसंघ की मुखिया साध्वियों में प्रथम हुईं। महासती गुलाबांजी पर जयाचार्य का कितना अनुग्रह रहा, छोटी अवस्था से वे जयाचार्य के सान्निध्य में रहीं। एक समय ऐसा भी आया, जब छोटी अवस्था में दीक्षित होने वाली महासती गुलाबांजी जयाचार्य का श्रुतलेखन करने वाली बन गईं। कई अन्य साध्वियां भी कितना-कितना कार्य करने वाली रही हैं। स्वभाव कहें या स्थिति, साध्वियों में संघीयनिष्ठा कुछ आधिक्य लिए हुए देखी जा सकती है। साध्वियों में भी कितनी-कितनी तपस्विनी हुई हैं। मुझे दिव्यतपस्विनी, दीर्घतपस्विनी साध्वी पन्नांजी की स्मृति हो गई, उन्हें हमने आंखों से देखा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी जैन विश्व भारती लाडनूं में विराज रहे थे। उस समय साध्वी पन्नांजी तपस्या कर रही थीं। वे तपस्या के दौरान भी जैन विश्व भारती में आतीं और गुरुदेव को तीन बार ऊठ-बैठ कर वन्दना करतीं। वे कितनी तपस्विनी और कितनी भक्ति वाली साध्वी थीं। इस प्रकार कई साध्वियों का जीवनवृत्त अपने आपमें प्रेरणास्पद माना जा सकता है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के जीवन को ही देख लें। आप में कितनी गंभीरता है, संस्कार हैं, सहिष्णुता है, सेवा की भावना है। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साध्वियों की सार-संभाल करने का कितना बड़ा और महत्त्वपूर्ण कार्य रहता है। इसके साथ साहित्य, जनसंपर्क आदि का कार्य भी रहता है। आपमें प्रतिभा भी है, कवित्व शक्ति भी है। इस प्रकार साध्वीप्रमुखाजी के जीवन से भी कई बातें सीखी जा सकती हैं।

इस प्रकार अच्छों की संगति में रहकर अच्छाइयों को ग्रहण करने का रुझान कल्याणकारी हो सकता है।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर तमिलनाडु में

महातपस्वी आचार्यप्रवर का ४६वां दीक्षा दिवस

१७ मई। वैशाख शुक्ला चतुर्दशी। परम पूज्य आचार्यप्रवर का ४६वां दीक्षा दिवस। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कुप्पानूर से कोम्मबुर की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती काठीरीय के ग्राम्यजन आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। सूर्य अपने उदयकाल के कुछ ही समय पश्चात् तेजस्विता बरसाने लगा, किन्तु मार्ग के दोनों ओर स्थित सघन वृक्षों की छाया राहगीरों को उसके आतप से बचा रही थी। सुपारी, नारियल, केला आदि के हजारों वृक्ष इस पथ को रमणीय रूप प्रदान किए हुए थे। मार्ग के पार्श्ववर्ती खेतों में बाजरी की फसल भी दिखाई दी।

कुछ आगे बढ़ने पर पर्वतीय क्षेत्र प्रारम्भ हो गया। ऊंचाई लिए हुए हरे-भरे पहाड़ विहार पथ की रमणीयता के मुख्य कारण प्रतीत हुए। इन पहाड़ों को देखकर पूज्यप्रवर की नेपाल यात्रा के अन्तर्गत की गई पर्वतीय पथ की यात्रा की कुछ-कुछ स्मृति हो रही थी। हालांकि न तो पहाड़ उतनी ऊंचाई लिए हुए थे और न ही मार्ग उतना आरोहण-अवरोहण से युक्त था, किन्तु हरियाली की सघनता कुछ-कुछ उन पर्वतों जैसी थी। पहाड़ों पर छाई हरितिमा के कारण पर्वतीय पत्थर भी नजर नहीं आ रहे थे।

इन हजारों-हजारों वृक्षों में न जाने कौन-कौन-सी प्रजातियां और जड़ी-बूटियां समाई हुई थीं। वाहनों की घर्र-घर्र की आवाज आरोहण के दौरान उनके इंजन पर पड़ने वाले दबाव को दर्शा रही थी, किन्तु ऐसे पथ में भी अहिंसा यात्रा के महानायक आचार्यप्रवर अपने कारवां का कुशल नेतृत्व करते हुए गतिमान थे।

धूप की प्रखरता के कारण आचार्यप्रवर का तन पसीने से भले तरबतर बना हुआ था, किन्तु आचार्यप्रवर की भाव-भंगिमा पर थकान का लवलेश भी दिखाई नहीं दे रहा था। पूज्यमुख पर तो थिरक रही थी सदाबहार मुस्कान। यह मुस्कान औरों की थकान को दूर करती-सी प्रतीत हो रही थी।

आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस संदर्भ में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ता और बेंगलुरु के कई युवक भी आज पूज्यसन्निधि में उपस्थित थे। करीब १०.६ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर कोम्मबुर में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने कहा कि जो साधु संयम पर्याय में रम जाता है, उसका सुख देवों के समान उत्तम होता है। यदि साधुत्व में मन रम जाए तो एक साधु का सुख देवों के समान ही नहीं, किसी अपेक्षा से देवों से भी ज्यादा हो सकता है। जिस साधु का मन साधुत्व में रमता नहीं है, वह साधु नारकीय दुःख का अनुभव कर सकता है। हम लोगों ने संयम के पथ पर पादन्यास किया है और मानों सुदूर मंजिल निर्धारित कर हम इस पथ पर गतिमान हुए हैं, यह बहुत बड़ी बात है। इस संदर्भ में साधु एक चक्रवर्ती से भी बड़ा होता है। आशातना न हो, साधु साधना की दृष्टि से देवता से भी बड़ा होता है। शास्त्र में कहा गया है कि देव भी उसे नमस्कार करते हैं, जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है।

आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी है। मेरे लिए तो आज का दिन मानों कोई सोने का सूरज लेकर आया था। ४५वर्ष पूर्व आज के दिन मेरी दीक्षा हुई तो मैंने मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) से संभवतः कहा भी था कि मेरे लिए आज सोने का सूरज उग रहा है। मुझे आज के दिन संयमरत्न मिला था। हम सभी चारित्रात्माएं इस माने में भाग्यशाली हैं कि हमें यह संयमरत्न प्राप्त हुआ है। बालावस्था में संयम की प्राप्ति और भी विशेष बात होती है।

मेरे सामने कई बालमुनि बैठे हैं। इन्होंने भी छोटी वय में संयमरत्न ग्रहण किया है। हम सभी धन्य हैं। संसार में और कई चीजें मिल सकती हैं और मैं तो यहां तक सोचता हूं कि कोई प्रधानमंत्री बन जाए, राष्ट्रपति बन जाए, किन्तु अध्यात्म के संदर्भ में उससे भी बड़ी बात है साधु बनना। इस संयमरत्न की पहरेदारी हमें रखनी चाहिए, ताकि कोई लुटेरा इसे लूट न ले। हम स्वयं इसके पहरेदार बनें कि मोहरूपी लुटेरा इस संयमरत्न को ले न जाए। पांच समितियां और तीन गुप्तियां--ये आठ प्रवचनमाताएं हमारे संयमरत्न की सुरक्षिकाएं हैं। ये मजबूत रहें तो महाव्रतरूपी संयमरत्न सुरक्षित रह सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की कृपा हुई और मुझे आज के दिन संयमरत्न मिल गया। गुरुदेव की अनुज्ञा से श्रद्धेय मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) ने मुझे यह रत्न मानों प्रदान किया था। मैं तो यह मानता हूं कि मुझे गुरुदेव की ओर से इतनी बड़ी संपत्ति प्रदान की गई थी। यह संपत्ति तो एफ.डी., कॉर्पस के समान है, इसमें और जोड़ना तो अच्छी बात है, किन्तु इसमें से व्यय नहीं होना चाहिए, यह ध्यातव्य है। हां, कुछ व्यय करना आवश्यक हो तो उसके ब्याज का उपयोग किया जा सकता है। चिकित्सा आदि में कोई दोष लग जाए तो संयमरूपी संपत्ति का ब्याज उपयोग में लिया जा सकता है, किन्तु उसके मूल को कम नहीं करना चाहिए।

संयम एक प्रकार का वृक्ष है। इसे हमें अमृत का सिंचन देना चाहिए। आगम स्वाध्याय, अन्य अच्छे ग्रंथों का स्वाध्याय, ध्यान, जप, संकल्प शक्ति आदि के माध्यम से इस संयमरूपी महावृक्ष को अमृत का सिंचन मिल सकता है। यह महावृक्ष छायादार, सायादार और फलद है। इसे सिंचन मिलते रहना चाहिए। थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन सिंचन देते रहना चाहिए।

(बाल मुनियों व बाल साध्वियों को संबोधित करते हुए) देखो, अभी का यह जो तुम्हारा समय है, वह एक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। अभी तुम बालावस्था में हो, किशोरावस्था में हो। लगभग पच्चीस-तीस वर्ष तक का समय ज्ञानार्जन के लिए, विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस अवस्था में अच्छे संस्कारों का ग्रहण, उनका विकास और पुष्टीकरण होते रहना चाहिए। बालमुनि और बालसाध्वियां धर्मसंघ की बालपौध है। हम भी इसे अच्छा सिंचन देने का ध्यान रखें, ताकि इसकी सुरक्षा भी रहे और इसका विकास भी अच्छा होता रहे। शारीरिक विकास भी अपेक्षित है, उससे भी बड़ी बात है, संयम का पौधा खूब अच्छे रूप में विकसित होता रहे। बाल साधु-साध्वियों की फुलवारी खूब अच्छी रहे, इसके अच्छे विकास का भी प्रयास हो और यह कभी ऐसी वृक्षावली बन जाए, जो स्वयं फल-फूल देने वाली हो। हम सभी अपने-अपने संयमरूपी वृक्ष की सुरक्षा और विकास के लिए सजग रहें।

संयम जीवन में प्रसन्नता रहनी चाहिए। साधु को बाहर के आनन्द में रस नहीं लेना चाहिए। उसे भीतर में रस लेने का प्रयास करना चाहिए। बाहर के आनन्द में डूब गए तो भीतर का आनन्द सो जाएगा। भीतर का आनन्द जाग गया तो बाहर का आनन्द सो जाएगा। हमारा जीवन भीतर के आनन्द को पाने का जीवन है, न कि बाहरी वैषेयिक सुखों को पाने का जीवन है। वैषेयिक सुख इक्षु के समान होते हैं, चूसने के बाद वे विरस बन जाते हैं। भीतर के सुख क्रमशः और अधिक सरस बन सकते हैं। हमें भीतरी सुखों को पाने और उनमें रहने का प्रयास करना चाहिए। बाहरी सुखों से विरति होगी तो भीतर के सुख प्राप्त हो सकेंगे।

साधु दुनिया का बहुत बड़ा आदमी होता है। उसके लिए ध्यातव्य है कि उसका बड़प्पन बरकरार रहे, कम न हो, अपितु और बढता जाए। हम अपने संयम पर्याय के प्रति जागरूक रहें, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर अपने दीक्षा प्रदाता, शासन स्तम्भ मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) की स्मृति में स्वरचित गीत का संगान भी किया, जो इस प्रकार है--

मंत्री मुनिवर पूज्य स्मृति पथ पर पधराते हैं।
शासन-नभ-नक्षत्र मानस को सरसाते हैं।
पधराते हैं, सरसाते हैं ऋषिवर शासन स्तम्भ।।

तुलसी प्रभुवर की सन्निधि में पाया संयम-रत्न।
धर्मसंघ की प्रोन्नति खातिर किया नियोजित यत्न।।१।।

पुरुष चतुष्टय को दीक्षित कर किया अनूठा कार्य।
संयम भावित चेता बनता जन-जन में स्वीकार्य।।२।।

श्रुत का पारायण कर व्रतिवर बने बहुश्रुत सन्त।
रत्नत्रय के आराधन से हो कर्मों का अन्त।।३।।

गण की सेवा खातिर मन में रहे सहज उत्साह।
सेवा करने वाला मानव पा लेता शुभ राह।।४।।

भैक्षव शासन नन्दनवन में खूब करें आनन्द।
'नेमांनंदन' संवर द्वारा हो कर्मागम बन्द।।५।।

लय - स्वामीजी रो शासन....

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का वाचन भी किया। तदुपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

पूज्यप्रवर का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में भी आयोजित हुआ। इस प्रसंग में आचार्यप्रवर ने कहा--'आज युवा दिवस भी है। युवक सामने उपस्थित हैं। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की कितनी शाखाएं भी हैं। युवकों में यथासंभव शनिवार की सामायिक का रुझान रहना चाहिए। शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच अपने परिवारों में भी सामायिक का उपक्रम चलाने का प्रयास करना चाहिए। युवकों में नशा न रहे, यह काम्य है।

तेरापंथ समाज से संबद्ध युवक अपने-अपने क्षेत्रों में आध्यात्मिक कार्य करते रहें। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की सामायिक आदि कई अच्छी-अच्छी गतिविधियां भी हैं, उन्हें अच्छे ढंग से आगे बढाते रहें। युवावस्था में जोश के साथ होश भी बना रहे। होश के साथ पवित्र कार्यों का जोश रहे। जोश किसी को प्रताड़ित करने के लिए नहीं, कल्याण करने के लिए हो। खूब अच्छा आध्यात्मिक कार्य चलता रहे। युवकों में खूब अच्छी निष्ठा बनी रहे।'

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'आज आचार्यप्रवर के मुखारविन्द पर अतिरिक्त प्रसन्नता नजर आ रही है। प्रवचन के दौरान भी आचार्यप्रवर के चेहरे पर स्मित बिखर रहा था। अब भी उल्लास है। शायद पैंतालीस वर्ष पूर्व की स्मृतियां आचार्यप्रवर के मस्तिष्क पर तैर रही होंगी। आचार्यप्रवर ने आज हमें यह बताया कि साधु जीवन कितना महत्त्वपूर्ण है और हमें प्रेरणा भी दी है कि साधु जीवन कैसा होना चाहिए। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के समय में एक बार प्रसंग चला कि साधु कैसा होना चाहिए। इसका उत्तर अनेक प्रकार से हो सकता है, किन्तु उस दिन की गोष्ठी का निष्कर्ष रहा कि साधु को मुनि मुदित (वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी) जैसा होना चाहिए। यह भी हमारे लिए गौरव की बात है कि हमारे आचार्यप्रवर ने अपने मुनि जीवन में भी गुरुओं के दिल में कितना स्थान प्राप्त कर लिया था। प्रसंगों, घटनाओं को जानने, सुनने से ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्यप्रवर अपने बचपन, किशोरावस्था से ही काफी समझदार थे। आप चिंतन करते थे, किसी भी बात को झटपट स्वीकार नहीं करते थे।

मैंने सुना है कि एक बार आचार्यप्रवर के संसारपक्षीय ननिहाल में कोई नानीजी थीं, उन्होंने पूछ लिया कि मोहन! तुम दीक्षा लोगे क्या? वे अपने हाथ में गेडिया (छड़ी) रखती थीं। आचार्यप्रवर ने कहा--'नानीजी ! दीक्षा कोई गेडिया नहीं, जो जब चाहो, तब ले लो और जब चाहो तब रख दो।' इस प्रकार उस समय भी आपमें कितनी सोच समझ थी। एक बार पींचा परिवार की एक बहन ने आचार्यप्रवर से पूछा--'मोहन! तुम दीक्षा ले रहे हो, तुम हमें भी दीक्षा के लिए तैयार कर दो। तुम हमारी सेवा करवाओगे ना? आचार्यप्रवर ने कहा--'यदि सेवा करवानी है तो अपनी-अपनी बेटी को साथ लाओ।' बारह वर्ष की छोटी उम्र में भी आचार्यप्रवर ने मानों दायित्व बोध की दृष्टि से उस बहन को यह उत्तर दिया। यह सूझबूझ भाग्य से मिलती है और उन व्यक्तियों को मिलती है, जो अपने जीवन में महान बनने वाले होते हैं।

हम सौभाग्यशाली हैं कि साधना करने के लिए तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। आचार्यों का पवित्र मार्गदर्शन भी मिलता रहता है। आचार्यप्रवर ने हमें अपने दीक्षा दिवस पर जो संदेश दिया है, हमारे माध्यम से पूरे धर्मसंघ को दिया है, यह संदेश हमारे रोम-रोम में व्याप्त हो। हम प्रेरणा प्राप्त करें कि आचार्यप्रवर अपनी साधना को किस प्रकार उत्तरोत्तर विकासशील बना रहे हैं, हम भी अपनी साधना को विकासशील बनाएं। आचार्यप्रवर की साधना के प्रति बहुत-बहुत मंगलकामना।'

युवा दिवस के संदर्भ में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री विमल कटारिया ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए अभातेयुप द्वारा किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। युवकों द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सायंकाल करीब पांच बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कोम्मबुर से कालीपेट्टाई की ओर प्रस्थान किया। विहार के प्रारम्भ में सूर्यकिरणें प्रखरता के साथ आतप बरसा रही थीं, किन्तु पूज्यप्रवर द्वारा कुछ ही दूरी तय किए जाने के उपरांत आसमान में मंडरा रहे बादलों ने सूर्य को अदृश्य बना दिया। कुछ ही देर में हल्की बूंदाबांदी भी प्रारम्भ हो गई, लेकिन वह ज्यादा समय तक नहीं चली। हवा का वेग बादलों को भले उड़ा ले गया हो, किन्तु उसकी ठंडक पहाड़ों से घिरे इस क्षेत्र को आंशिक रूप में हिल स्टेशन का रूप प्रदान कर रही थी। पहाड़ों के कारण विहार पथ आरोहों-अवरोहों से युक्त था, लेकिन आचार्यप्रवर अस्खलित गति से गंतव्य की ओर गतिमान थे।

इस क्षेत्र का 'गुण्ड' प्रजाति का आम प्रसिद्ध है। मार्ग के दोनों ओर अनेक आम विक्रेता बैठे हुए दिखाई दे रहे थे। उनमें एक विक्रेता संतों से आम लेने का आग्रह करने लगा। संत बोले--'हमारे पास रुपये नहीं हैं।' वह बोला-'मुझे रुपये नहीं चाहिए, बस आप एक आम ले लो।' संतों ने उसे साधुचर्या की जानकारी देते हुए बताया-- 'हम इसे छू भी नहीं सकते।' वह व्यक्ति यह जानकर प्रणत हो गया। कालीपेट्टाई के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर लगभग ४.६ कि.मी. का विहार कर कालीपेट्टाई में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकण्डरी स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

हरितिमायुक्त पर्वतीय क्षेत्र में

१८ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः कालीपेट्टाई से मोक्कारेड्डी पट्टी की ओर प्रस्थित हुए। आज के विहार पथ के भी दोनों ओर हरे-भरे पहाड़ खड़े थे। पहाड़ों के कारण सूर्य कुछ ऊंचाई पर पहुंचने के बाद ही दृष्टिगोचर हुआ। दूर-दूर तक फैली हुई हरियाली वर्षा और नए पत्तों के कारण साफ-सुथरी दृष्टिगोचर हो रही थी। इस कारण उसकी हरितिमा बढी हुई प्रतीत हो रही थी और वह राहगीरों के मन को सुकून भी दे रही थी। मार्ग के परिपार्श्वस्थ कई खेतों में नारियल के वृक्ष प्रचुरता लिए हुए थे तो कई खेतों में नई फसल की तैयारी चल रही थी। घरों के आसपास सुपारी, नीलगिरि आदि के वृक्ष भी दिखाई दे रहे थे।

तमिलनाडु के इन क्षेत्रों में प्रायः प्रत्येक गांव के बाहर 'मुनियप्पण' स्थापित हैं। उत्तर भारत में जिस प्रकार क्षेत्र रक्षक के रूप में भैरुंजी की स्थापना की जाती है, उसी प्रकार इन क्षेत्रों में इन यक्ष मंदिरों को क्षेत्र की रक्षार्थ स्थापित किया जाता है। प्रायः गावों के बाहर 'मुनियप्पण' की कुछ बड़ी आकार की प्रतिमाएं स्थापित हैं। पूज्यप्रवर १२.२ कि.मी. का विहार कर मोक्कारेड्डी पट्टी में स्थित स्टेनले मेट्रिकुलेशन हायर सैकण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'ज्ञानी और त्यागी साधु की पर्युपासना से तत्त्वबोध प्राप्त हो सकता है, आत्मकल्याण का उपाय ज्ञात हो सकता है और सन्मार्ग दर्शन हो सकता है। आदमी को त्यागी और ज्ञानी गुरु की पर्युपासना कर ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

अमेरिका के मायामी में स्थित फ्लोरिडा इन्टरनेशनल युनिवर्सिटि में करीब नौ माह अध्यापन कार्य कर गुरुचरणों में पहुंची समणी सत्यप्रज्ञाजी और समणी रोहिणिप्रज्ञाजी के विषय में पूज्यप्रवर ने कहा--'समणियां आज अमेरिका से पहुंची हैं। अध्यापन का कार्य कर आई हैं।' कार्यक्रम में समणी सत्यप्रज्ञाजी और रोहिणिप्रज्ञाजी ने अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

१९ मई। आज प्रातः परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मोक्कारेड्डी पट्टी से एच.डोडमपट्टी के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में एक ओर सूर्य अपनी तेजस्विता के साथ गति करता हुआ आतप बरसा रहा था तो वहीं दूसरी ओर अध्यात्म जगत के महासूर्य, महातपस्वी आचार्यप्रवर अपनी तेजस्विता के साथ गति करते हुए जन-जन

के आतप का हरण कर रहे थे। मार्ग के किनारे स्थित वृक्षों की छाया विहार पथ को कुछ अनुकूलता प्रदान किए हुए थी। रविवार होने के कारण पूज्यसन्निधि में बेंगलुरु, चेन्नई तथा आसपास के क्षेत्रों से आए श्रद्धालुओं की अच्छी भीड़ दिखाई दे रही थी। लगभग ११ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर एच.डोडमपट्टी में स्थित जयम विद्यालय मैट्रिकुलेशन हायर सैकण्ड्री स्कूल में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में एक कथानक के माध्यम से नौ तत्त्वों, देव-गुरु व धर्म, सम्यक्त्व दीक्षा आदि को विवेचित करते हुए सम्यक्त्व को परिपुष्ट रखने की प्रेरणा प्रदान की।

वेलूरवासियों को मिली सरप्राइज सौगात

२० मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः एच.डोडमपट्टी से सेक्कमपट्टी की ओर प्रस्थान किया। जयम विद्यालय मेट्रिकुलेशन हायर सैकेण्ड्री स्कूल से संबंधित लोगों ने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्गस्थ हरुर के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। हरुर के म्युनिसिपल चेयरमेन श्री कालेरी तथा पूर्व चेयरमेन श्री टी.एन.टी.राजा आदि कई लोगों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीष प्राप्त की। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से कई लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प भी स्वीकार किया। करीब १३.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर सेक्कमपट्टी में स्थित पी.डी. आर.वी.मेट्रिकुलेशन स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

आज के विहार मार्ग के समीप लगे एक बोर्ड पर अंकित था--वेलूर-१४४ कि.मी.। मुख्यमुनिश्री ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'आचार्यप्रवर की यात्रा में वेलूर के आसपास के श्रद्धा के प्रायः सभी क्षेत्रों का स्पर्श हो रहा है, किन्तु वेलूर रह गया। जबकि वेलूर चेन्नई से बेंगलुरु जाने के मार्ग में आता है।' पूज्यप्रवर के आसपास चल रहे मुनि मृदुकुमारजी ने निवेदन किया--'यदि वेलूर जाना होता तो मात्र कुछ दिन लम्बे विहार करने होते।' मुख्यमुनिश्री ने कहा--'लेकिन, वह तो सेलम से विहार करने से पूर्व वेलूर स्पर्श का निर्णय हो जाता है, तब संभव होता।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'अब भी तो वहां जाना हो सकता है। यदि हम बीस-बीस कि.मी. प्रतिदिन विहार करें तो सात दिनों में वेलूर पहुंचा जा सकता है।' इस प्रकार कुछ समय वार्तालाप चला। ज्ञातव्य है कि वेलूरवासी चेन्नई चातुर्मासकाल से पूज्यप्रवर को वेलूर पधारने की पुरजोर प्रार्थना कर रहे थे। पूज्यप्रवर के सेलम प्रवास तक भी उनकी अर्ज का दौर चलता रहा, किन्तु पूज्यप्रवर ने वेलूर पधारने की घोषणा नहीं की तो उन्होंने इसकी आशा ही छोड़ दी, किन्तु भक्तवत्सल आचार्यप्रवर में वेलूर का स्पर्श करने की भावना अवस्थिति लिए हुई थी।

प्रवास कक्ष में पधारने के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी आदि साधु-साध्वियों की उपस्थिति में इस चर्चा को आगे बढाते हुए फरमाया--'अभी हम सुदूर क्षेत्रों की यात्रा कर रहे हैं। यदि वेलूर इस समय जाना नहीं हुआ तो पुनः तो कब आना होगा।' मुनिवृन्द ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'आचार्यप्रवर अब वेलूर पधारने के लिए करीब ७० कि.मी. अधिक चलना होगा और इसके लिए काफी लम्बे-लम्बे विहार करने होंगे और इस समय गर्मी भी प्रचण्ड है।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'मन बन जाता है तो लम्बे-लम्बे विहार भी किए जा सकते हैं।' इस प्रकार काफी समय तक वार्तालाप चला। वार्तालाप के दौरान आचार्यप्रवर की वेलूर पधारने की भावना बलवती प्रतीत हुई। आखिर आचार्यप्रवर ने पूछा--'यहां वेलूर के कोई लोग हैं क्या?' आचार्यप्रवर के इस संकेत की जानकारी पाकर वेलूर के कुछ लोग, जो मार्गसेवा में थे, पूज्यसन्निधि में पहुंच गए। आचार्यप्रवर ने मई अथवा जून २०१९ में वेलूर का स्पर्श करने की घोषणा कर दी। आचार्यप्रवर की यह घोषणा जहां वेलूरवासियों के लिए खुशियों की सौगात थी तो अन्य लोगों के लिए आश्चर्यकारी। क्योंकि वेलूर तमिलनाडु

का सबसे गर्म क्षेत्र माना जाता है और आचार्यप्रवर ने प्रचण्ड गर्मी के दिनों में करीब सत्तर कि.मी. की अतिरिक्त यात्रा स्वीकार कर वहां पधारने की घोषणा की थी। वेलूरवासियों को महीनों तक मांगने से जो नहीं मिला, आज वह बिना मांगे ही अनायास मिल गया।

समत्व में रहो, सुखी रहोगे

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी प्रसन्न रहना चाहता है। हमारी प्रसन्नता पदार्थ आधारित, परिस्थिति आधारित भी हो सकती है तो पदार्थ और परिस्थिति निरपेक्ष भी हो सकती है। परिस्थिति सापेक्ष और परिस्थिति निरपेक्ष प्रसन्नता में बड़ा अन्तर होता है। आदमी को समता के अभ्यास के द्वारा स्वयं को विशेष रूप से प्रसन्न बनाना चाहिए।

जीवन में कभी अनुकूलता तो कभी प्रतिकूलता की स्थितियां आ सकती हैं। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा और मान-अपमान--इन द्वन्द्वात्मक स्थितियों में समता रहनी चाहिए। समता, सहिष्णुता होती है तो व्यक्ति सुखी रह सकता है, प्रसन्न रह सकता है। कार्यकर्ता को भी समतावान रहने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति समता की साधना करता है, वह महान बन जाता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज सायं लगभग पांच बजे सेक्कमपट्टी से वीतापट्टी के लिए प्रस्थान किया। विहार के प्रारम्भ में अपनी तीव्रता से राहगीरों के शरीर को मानों झुलसाने वाली सूर्य किरणों को कुछ समय बाद मेघसमूहों ने बाधित कर दिया। लगभग ५.२ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर वीतापट्टी में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकण्डरी स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

जैसी करणी, वैसी भरणी

२१ मई। आज प्रातः परम पूज्य आचार्यप्रवर ने वीतापट्टी से काट्टेरी के लिए प्रस्थान किया। सम्मुखीन सूर्य के प्रखर आतप की परवाह किए बिना आचार्यप्रवर अपने गंतव्य की ओर गतिमान थे। मार्ग में 'तेनपेन्नई' नदी पर बना पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बना। यह नदी वर्तमान में सूखी अवस्था में दृष्टिगोचर हो रही थी। मार्ग के दोनों ओर स्थित खेतों में आम, मिर्ची, ईख, केले आदि की खेती प्रचुरता लिए हुए दिखाई दे रही थी। मार्गस्थ हनुमंत तीर्थम के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर ने आज सेलम जिला से कृष्णगिरि जिले में पावन प्रवेश किया। करीब १०.८ कि. मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर काट्टेरी में स्थित श्री विद्या मंदिर आर्ट्स एण्ड साइंस कॉलेज में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'पुण्य और पाप अपना-अपना होता है। जो आदमी उनका अर्जन करता है, उसे ही उन्हें भोगना होता है। व्यवहार की दुनिया में यह भी कहा जा सकता है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक व्यक्ति को कष्ट दिया आदि, किन्तु निश्चय नय के अनुसार आदमी अपने ही कर्मों के कारण सुख और दुःख प्राप्त करता है। व्यवहार में यह भी देखा जाता है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ अनुकूल व्यवहार करता है, उसका सहयोग करता है तो दूसरा व्यक्ति भी पहले वाले व्यक्ति के प्रति अनुकूल व्यवहार कर सकता है, उसका सहयोग कर सकता है। स्वयं का व्यवहार शिष्ट है तो उसे दूसरों का भी शिष्ट व्यवहार प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार 'जैसी करणी वैसी भरणी' का सिद्धान्त स्थूल व्यवहार के क्षेत्र में भी देखा जा सकता है। आदमी को किसी को दुःख देने, गिराने का प्रयास नहीं करना चाहिए।'

कॉलेज के सेक्रेट्री वेंकटाचलम ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'परम पूजनीय आचार्यश्री महाश्रमणजी

की चरणरज पाकर हमारा विद्यालय पावन हो गया है। आचार्यश्री के आने से हमारे विद्यालय का सम्मान और गौरव बढा है। आप समाज सुधार और जन-जन के कल्याण के लिए अहिंसा यात्रा के रूप में महान पदयात्रा कर रहे हैं। मैं ऐसे चलते-फिरते पावन तीर्थ का स्वागत करते हुए स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं।'

पूज्यप्रवर ने उन्हें अग्रेंजी भाषा में मंगलप्रेरणा प्रदान की।

मुनि गणभक्तजी की स्मृतिसभा

गत १६ मई २०१६ को छापर में प्रवासित मुनि गणभक्तजी कालधर्म को प्राप्त हो गए। आज के कार्यक्रम में उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'मुनि गणभक्तजी संसारपक्ष में केलवा के बोहरा परिवार से संबद्ध थे। वे विवाहित थे, अपनी पत्नी और पुत्रों को छोड़कर उन्होंने दीक्षा ग्रहण की थी। विज्ञप्ति वर्ष १६ अंक ४७ के अनुसार मैंने उन्हें सन् २०११ को केलवा में समण दीक्षा और सन् २०१२ में आमेट में मुनि दीक्षा दी तथा सन् २०१४ में 'भक्त हृदय' सम्बोधन से सम्बोधित किया था। वि. सं. २०७६ ज्येष्ठ कृष्णा एकम को मध्याह्न में करीब एक बजे छापर में उनका देहावसान हो गया। छापर में मुनि तत्त्वरुचिजी के सिंघाड़े का सेवाकाल है। संतों को भी सेवा का एक मौका मिला। सेवा करना अच्छा कार्य है। सेवा का संस्कार हम सबमें रहना चाहिए। साधु की सेवा करने वाला साधु और साध्वी की सेवा करने वाली साध्वी निर्जरा धर्म की आराधना करते हैं। हमें सेवा धर्म की आराधना करनी चाहिए। मुनि गणभक्तजी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।'

आचार्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने मुनि गणभक्तजी के प्रति मध्यस्थ भाव स्वरूप चार लोगस्स का ध्यान किया।

साध्वीप्रमुखाजी ने इस अवसर पर कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ सबके लिए आश्रय है। जैसे मां-पिता अपनी संतान की सार-संभाल करते हैं, वैसे ही संघ हमारी सार-संभाल करता है। मुनि गणभक्तजी का देहावसान हो गया। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने ही उन्हें दीक्षित किया था। वे कोई बहुत बड़े विद्वान नहीं थे, तपस्वी नहीं थे, साहित्यकार भी नहीं थे, अपनी विशेष सेवा भी नहीं दे पाए। किन्तु उनकी जो सेवा हुई, वह 'संघ सबका आश्वास है' इसका साक्ष्य है। गृहस्थावस्था में उनकी भक्ति की भावना गोचरी के संदर्भ में मुखर होती थी। केलवा चतुर्मास में उनकी यह भक्ति देखने को मिली। वे संघ में आए, संघ में रहकर गुरुदेव के निर्देशानुसार साधना की, संघ में उनकी सेवा हुई और उनका देहावसान हो गया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर वीतरागता की दिशा में आगे बढती रहे।'

मुनि कोमलकुमारजी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

तपती दुपहरी में विहार

सायंकाल परमश्रद्धास्पद आचार्यप्रवर लगभग ४.३० बजे काट्टेरी से उत्थांगरै के लिए प्रस्थित हुए। गंतव्य स्थल की कुछ अधिक दूरी को देखते हुए विहार कुछ जल्दी प्रारंभ किया गया था, इसलिए विहार के प्रारंभ में गर्मी कुछ प्रखरता लिए हुए थी। तीखी धूप मानों तन को बींध रही थी। कहीं-कहीं वृक्षों की छाया आतप की तीव्रता से बचा रही थी। गंतव्य स्थल और सूर्यास्त के समय की निकटता बढने के साथ-साथ सूर्य भी क्रमशः ढलता गया। पूज्यप्रवर करीब ६.८ कि.मी. का विहार कर उत्थांगरै में पधारे। स्थानीय लायंस क्लब के सदस्यों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर सादर स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। श्री विद्या मंदिर मेट्रिकुलेशन हायर सैकण्ड्री स्कूल में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

विकसित हो मैत्रीभाव

२२ मई। आज प्रातः परम पूज्य आचार्यप्रवर उत्थांगरै से करपट्टु के लिए प्रस्थित हुए। विहार के दौरान उत्थांगरै लायंस क्लब के प्रेसिडेंट श्री राजमणिरत्न, रॉयल क्लब के प्रेसिडेंट श्री सुधाकर आदि लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा देते हुए मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। उत्थांगरै के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। स्थानीय बजाज शोरुम के ऑनर श्री अम्बु कलश, नारियल आदि साथ लिए सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की तो उन्होंने और उनके पुत्र ने नशामुक्त रहने की प्रतिज्ञा व्यक्त की। उमियानूर के ग्रामीण भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर करीब १३.८ कि. मी. का विहार कर करपट्टु में स्थित एस.आर.एस. मेट्रिकुलेशन हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर श्री श्रीनिवासन पूज्यप्रवर के स्वागत में सपरिवार उपस्थित थे। उन्होंने 'वंदे गुरुवरम्' उच्चरित करते हुए पूज्यप्रवर को पंचांग वंदन कर सादर स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में मैत्रीभाव के विकास की प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय के चेयरमेन श्री श्रीनिवासन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष हमारे विद्यालय में पधारे, यह हमारा सौभाग्य है। मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं। आप जनकल्याण के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहे हैं।'

पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में पावन प्रेरणा प्रदान की।

सायंकाल करीब ४.४४ बजे आचार्यप्रवर ने करपट्टु से कोराट्टी की ओर प्रस्थान किया। विहार से कुछ ही समय पूर्व हल्के बादल आसमान में छा गए, जिसके कारण कुछ समय पूर्व भीषण गर्मी का अहसास कराने वाला मौसम खुशनुमा बन गया। पूज्यप्रवर विहार के दौरान कृष्णगिरि जिला से वेलूर जिला में पधारे। लगभग ५.७ कि.मी. का विहार कर कोराट्टी में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर तथा पेरेंटिंग टीचर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट श्री कामराज ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण का स्वागत किया।

आज तिरुपत्तूर के विधायक श्री नलत्तम्बी तथा तिरुपत्तूर के पूर्व चेयरमेन श्री आरस ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

जैनाचार्य के स्वागत में उमड़ा जैन समाज

२३ मई। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः कोराट्टी से पालनाकुप्पम की ओर प्रस्थान किया। आज का विहार कुछ लंबा था, किन्तु मार्गवर्ती तिरुपत्तूर के जैन समाज के लोगों की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर ने आज का प्रातराश एवं मुख्य प्रवचन कार्यक्रम तिरुपत्तूर में करना स्वीकार कर लिया। इस स्वीकरण का अर्थ था मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरांत चिलचिलाती धूप में करीब छह कि.मी. चलना। लेकिन आचार्यप्रवर ने इस भीषण गर्मी की परवाह किए बिना एक तेरापंथी परिवार एवं अन्य जैन परिवारों की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। आज के विहार पथ में एलबमपट्टी और पुलिकुट्टे के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर करीब आठ कि.मी. का विहार कर तिरुपत्तूर पधारे। आचार्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय जनता उमड़ आई। लोगों के हृदय का उल्लास उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर प्रतिबिंबित हो रहा था। मूर्तिपूजक समाज के नवयुवक अपनी परंपरानुसार बैण्डवादन करते हुए अपने उत्साह को अभिव्यक्ति दे रहे थे। बुलन्द

जयघोषों में मुखरित हो रही थी स्थानीय एक तेरापंथी परिवार, स्थानकवासी समाज और मूर्तिपूजक समाज की भीतरी प्रसन्नता। कई जैन श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और स्वागत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर एस.एस.जैन स्थानक में पधारे। वहां आचार्यप्रवर का स्वल्पकालिक प्रवास और प्रातराश हुआ। तदुपरान्त आचार्यप्रवर श्री जिनदत्त कुशल आराधना भवन में पधारे। वहां आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम समायोजित हुआ।

कार्यक्रम में स्थानीय मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री ललित कवाड़, तेरापंथ समाज के श्री विकास संचेती और लॉयन्स क्लब के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर श्री एन.नटराजन ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में पौद्गलिक और आध्यात्मिक सुख को व्याख्यायित करते हुए सुखी बनने के उपायों की चर्चा की।

कार्यक्रम के उपरांत परमाराध्य आचार्यप्रवर करीब ९.५५ बजे तिरुपत्तूर से प्रस्थित हुए। तीव्र आतप लिए सूर्य आसमान के मध्य भाग के काफी निकट पहुंच चुका था, इसलिए मार्ग पर प्रायः छाया कहीं दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। इस भीषण गर्मी में पूज्यप्रवर का तन पसीने से तरबतर बना हुआ था, किन्तु आचार्यप्रवर का समत्व भाव अविचल था। प्रातःकाल प्रस्थान के उपरांत कुल करीब १४.२ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर लगभग ११.२० बजे पूज्यप्रवर पालनाकुप्पम में स्थित नंदिनी महल में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ।

वेलूर के लिए करीब सत्तर कि.मी. की अतिरिक्त यात्रा को स्वीकार करने और उसे पूर्व निर्धारित पथ के साथ दस दिनों में पाटने के निर्णय से यह स्पष्ट हो गया था कि आचार्यप्रवर को इसके लिए भीषण गर्मी में लम्बे-लम्बे विहार करने होंगे। दृढसंकल्प के धनी आचार्यप्रवर के लिए मौसम की प्रतिकूलता न कभी पहले बाधक बन सकी और न ही अब। वेलूर तमिलनाडु के सबसे गर्म क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, वहां प्रचंड गर्मी के मौसम में पधारने की घोषणा आचार्यप्रवर के आत्मबल के साथ-साथ आचार्यप्रवर की परोपकार की भावना से ओतप्रोत भक्त वत्सलता और करुणा की साक्ष्य थी। पूज्यप्रवर ने आज कुल २१.८ कि.मी. विहार करना स्वीकार किया, जिसमें से करीब १४.२ कि.मी. का विहार प्रातः और मध्याह्न में हो चुका था। शेष दूरी को पाटने के लिए आचार्यप्रवर करीब ४.१५ बजे पालनाकुप्पम से पोन्नेरी की ओर प्रस्थित हुए। अपराह्न में हुई हल्की वर्षा को देखकर यह अनुमानित हो रहा था कि सायंकालीन विहार में उष्णता नहीं रहेगी, किन्तु वर्षा के कुछ ही समय पश्चात् बादल अदृश्य हो गए और पुनः गर्मी का साम्राज्य छा गया। आचार्यप्रवर चिलचिलाती धूप में गतिमान थे। लगभग ७.६ कि.मी. का विहार कर पोन्नेरी में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

पहली बार आराध्य के आगमन से आह्लादित वानियमबाड़ीवासी

२४ मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः पोन्नेरी से वानियमबाड़ी की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर के पर्दापण से उल्लसित वानियमबाड़ी के श्रद्धालु और उनके संबंधीजन सूर्योदय से पूर्व ही पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए। आचार्यप्रवर ने संबंधित लोगों की प्रार्थना पर विहार के मध्य मरुधर केसरी जैन कॉलेज में पधारे। मरुधर केसरी जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमल मूथा, मंत्री श्री लक्ष्मीचंद सिंघवी आदि ट्रस्ट से जुड़े हुए लोग पूज्यप्रवर के स्वागत में सोल्लास उपस्थित थे। कॉलेज की शिक्षिकाएं मार्ग के दोनों ओर लम्बी दूरी तक पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खडी थीं। पूज्यप्रवर के पदार्पण से कॉलेज परिसर में

उत्सव का वातावरण था। आचार्यप्रवर परिसर में स्थित सिल्वर जुबली बिल्डिंग में पधारे और वहां निर्मित हॉल में आसीन हुए। वहां पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में संक्षिप्त कार्यक्रम चला। कार्यक्रम के दौरान श्री मरुधर केसरी जैन ट्रस्ट के मंत्री श्री लक्ष्मीचंद सिंघवी तथा कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ एम.एस.सिंघल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में प्रदत्त अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'आज हम तमिलनाडु की यात्रा के दौरान इस श्री मरुधर केसरी जैन कॉलेज में आए हैं। मुनि रूपचंदजी महाराज से हमारा कई बार मिलना हुआ। करीब ३६ वर्षों पूर्व जब गुरुदेव तुलसी जोधपुर में पधारे थे, तब उनसे मिलना हुआ था। तब रूपचंदजी महाराज ने कहा था कि हम तो एक ही अनाज (मूंग) के दो फाड़ हैं, ऐसी मुझे स्मृति है। चूंकि मरुधर केसरी जैन कॉलेज जैन समाज से जुडा हुआ है, इसलिए इस कॉलेज में जितना संभव हो, जैनिज्म का प्रभाव रहे। पर्युषण पर्व के समय कुछ पर्युषण, संवत्सरी, जैन दर्शन आदि पर यहां व्याख्यान भी रखे जा सकते हैं। इस प्रकार यदा-कदा जैनिज्म आदि के विषय में भी विद्यार्थियों को शिक्षण दिया जाना चाहिए।

कॉलेज से संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। तदुपरान्त पूज्यप्रवर से मंगल पाठ का श्रवण कर आचार्यश्री महाश्रमण पुस्तकालय का उद्‌घाटन किया गया। चूंकि पुस्तकालय प्रथम मंजिल पर स्थित था, इसलिए पूज्यप्रवर ने कुछ सीढियों पर ही आरोहण कर मंगलपाठ सुनाया। पूज्यप्रवर के निर्देश पर मुख्यमुनिश्री पुस्तकालय में पधारे। प्रिंसिपल श्री एम.एस.सिंघल की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर उनकी ऑफिस में भी पधारे और उन्हें मंगलपाठ सुनाया।

पूज्यप्रवर पुनः वानियमबाड़ी की ओर प्रस्थित हुए। कॉलेज में पदार्पण और वहां आयोजित कार्यक्रम से हुए विलम्ब के कारण धूप का तीखापन और भी बढ़ चुका था, किन्तु आचार्यप्रवर पसीने से तरबतर अपने तन की परवाह किए बिना भक्तों को अमृत सिंचन से तरबतर बनाने के लिए गतिमान थे।

तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का पहली बार पदार्पण वानियमबाड़ीवासी श्रद्धालुओं के लिए मानों सभी त्यौहारों का संगम था। इसलिए हर ओर प्रसन्नता का वातावरण छाया हुआ था। लोग पलक पांवड़े बिछाए आचार्यप्रवर की आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। पूज्यप्रवर के पदार्पण के साथ वानियमबाड़ीवासियों के उल्लास और उमंग चरम को छूने लगे। लोगों की भीड़ और उत्साह को देखकर यह अनुमानित करना कठिन था कि वानियमबाड़ी में केवल पांच तेरापंथी परिवार (दो परिवारों की शाखाएं) ही निवासित हैं। जहां वानियमबाड़ीवासियों के संबंधीजन चेन्नइ, बेंगलुरु आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में पूज्य सन्निधि में पहुंच गए थे, वहीं स्थानीय अन्य जैन समाज के लोग भी बड़ी संख्या में सोत्साह उपस्थित थे। जैनेतर समाज के लोगों की उपस्थिति भी स्वागत जुलूस को भव्यता प्रदान किए हुए थी। स्थानीय विश्वकर्मा (स्वर्णकार) समाज के लोगों ने भी पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीष प्राप्त की।

जुलूस के दौरान कई लोगों को अपने-अपने घरों, दुकानों आदि के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग ११ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर वानियमबाड़ी के हिन्दू हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्‌बोधन हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में दया के महत्त्व को विवेचित किया। आचार्यप्रवर ने वानियमवाड़ीवासियों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए।

श्री सुरेश दुगड़, श्रीमती वर्षा दुगड़, श्री दिलीप बाफणा, श्री गणेश आचार्य, श्री अशोक संकलेचा, मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री मदनलाल मेहता और स्थानकवासी समाज की ओर से श्री उत्तमचंद दुगड़

ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति के माध्यम से आचार्यप्रवर का स्वागत किया।

वानियमवाड़ी की कन्याओं और महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने आचार्यप्रवर की अभिवन्दना में अपनी प्रस्तुति दी। दुगड़ परिवार की बहनों ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। हिन्दू हाइ स्कूल के प्रिंसिपल श्री करुणागरन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

आज डॉ अकबर घौष नामक एक यूनानी चिकित्सक पूज्यसन्निधि में आए। अपनी परंपरानुसार पूज्यप्रवर का अभिवादन कर वे बोले--'मैं हज जाकर आया हूं। वहां से मैं जो शुद्ध पानी लाया हूं, वह मैं आपको समर्पित करना चाहता हूं, ताकि आपकी यह यात्रा और ज्यादा कामयाब हो।' आचार्यप्रवर ने केवल उनके मंगलभावों स्वीकार कर उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की।

पहले ज्ञान, फिर दया

२५ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः वानियमबाड़ी से अम्बुर की ओर प्रस्थान किया। इस अवसर पर वानियमबाड़ी के लोग मंगलभावों के साथ पूज्यसन्निधि में उपस्थित थे। इन दिनों गुड़ियात्तम और वेलूर के लोग प्रायः प्रतिदिन आचार्यप्रवर की मार्ग सेवा हेतु उपस्थित हो रहे हैं। इस भीषण गर्मी में श्रद्धालु आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचकर मानों आध्यात्मिक शीतलता की अनुभूति करते हैं। पूज्यप्रवर चिलचिलाती धूप में लगभग १४ कि.मी. का विहार कर अम्बुर में स्थित के.ए.आर. पॉलिटेक्निक कॉलेज में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में सम्यक् ज्ञान का बहुत महत्त्व है। उसके बाद मोक्ष के लिए सम्यक् दया अर्थात् सम्यक् आचरण आवश्यक होता है। ज्ञान अपने आपमें पवित्र है। ज्ञान होने के बाद उसका क्या उपयोग होता है, यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है। राग-द्वेष युक्त प्रवृत्ति पाप का बंध कराने वाली हो सकती है।

आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि वह किस क्षेत्र का ज्ञान करे। आध्यात्मिक संदर्भ में सम्यक् ज्ञान का प्रथम स्थान है, आचार का दूसरा स्थान है और विद्वत्ता, पाण्डित्य आदि का तीसरा स्थान है। जीवन में विद्वत्ता, पाण्डित्य का महत्त्व है, किन्तु चारित्र नहीं है तो शेष बातें गौण हो जाती हैं। चारित्र के लिए सम्यक् ज्ञान आवश्यक होता है। आगम आदि का स्वाध्याय करते हैं तो ज्ञान भी अच्छा हो सकता है और आचरण भी अच्छा हो सकता है।'

सायंकाल करीब ४.४४ बजे पूज्यप्रवर अम्बुर से पुदूगोविन्दापुरम की ओर प्रस्थित हुए। विहार के प्रारंभिक काल में मौसम में बदलाव शुरू हो गया। धीरे-धीरे बादलों ने सूर्य को ढक लिया। मंद-मंद हवा भी बहने लगी। थोड़े समय में हल्की बूंदाबांदी प्रारंभ हो गई, किन्तु वह मात्र कुछ समय तक ही हुई। हल्की वर्षा, बादलों और मंद हवा के कारण मौसम सुहावना बन गया। करीब ५.७ कि.मी. का विहार कर पुदूगोविन्दापुरम में स्थित श्री विद्या विहार मेट्रिकुलेशन हायर सैकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

येलगिरि पर्वत की तलहटी में बसा यह गांव प्राकृतिक सुषमा लिए हुए है। येलगिरि हिल स्टेशन के रूप में पर्यटकों को आकर्षित करता है। पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल से येलगिरि निकट ही दृष्टिगोचर हो रहा था। रात्रि में पर्वत पर आरोहण कर रहे वाहनों का प्रकाश अंधकार में मनोहारी दृश्य उत्पन्न कर रहा था।

अभय व्यक्ति होता है सुखी

२६ मई। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः पुदूगोविन्दपुरम से मदनूर की ओर प्रस्थित हुए। रविवार के

कारण श्रद्धालुओं की उपस्थिति अच्छी संख्या में थी। विहार पथ के आसपास स्थित पहाड़ कहीं हरितिमा लिए हुए थे तो कहीं सूखी अवस्था में। 'जमीन' गांव के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मार्ग में एक बांबी से बाहर निकलता सांप आचार्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना वह कुछ दूर आगे बढकर भूमिगत हो गया। इस क्षेत्र में मार्ग के आसपास यत्र-तत्र विशालकाय बांबियां नजर आती हैं। कोई-कोई बांबी तो लोगों के लिए पूजास्थल बनी हुई है। करीब १४.२ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर मदनुर में स्थित जे.बी.आर. महल में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से मदनूर निवासी एक तेरापंथी परिवार अतिशय हर्षविभोर था।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में एक समस्या है भय। प्राणी डरते हैं। आदमी पशु से डरता है तो पशु आदमी से डरता है। आदमी आदमी से भी डर सकता है। भूत, प्रेत, बीमारी, अपमान आदि से भी व्यक्ति डर सकता है। भयभीत आदमी दुःखी होता है। जो व्यक्ति पूर्णतया भयमुक्त बन जाता है, वह सुखी हो सकता है। भयभीत व्यक्ति हिंसा व मृषा में प्रवृत्त हो सकता है। आदमी को यह सोचना चाहिए कि कोई उसे डराता है तो उसे कष्ट होता है, इसलिए वह किसी को डराने का प्रयास न करे। जो न डरता है और न ही डराता है, वह अहिंसा की साधना अच्छी तरह कर सकता है।

कई बार आदमी काल्पनिक स्थिति से डर जाता है। भय एक दुर्बलता है। जो व्यक्ति सभी प्राणियों के प्रति मैत्री की भावना रखता है, वह अभय बन सकता है। मैत्री से अभय की पुष्टि होती है। आदमी को अभयदाता बनना चाहिए। किसी प्राणी को मारने का त्याग करना अभयदान होता है। अभयदान श्रेष्ठ होता है। बिल्कुल नहीं डरना तो बहुत अच्छी बात है। किसी को डर लगे तो उसे वीतराग आत्मा का स्मरण करना चाहिए।'

सुश्री वर्षा सुंदेचा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी। सुंदेचा परिवार से संबंधित बाइयों व पुरुषों द्वारा पृथक्-पृथक् स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए।

सायंकाल करीब ४.४४ बजे आचार्यप्रवर मदनूर से अग्रमचेरी की ओर प्रस्थित हुए। विहार के प्रारंभ में धूप कुछ प्रखरता लिए हुए थी, किन्तु कुछ ही समय में बादलों ने उसे बाधित कर दिया। मेघगर्जना होने लगी। यदा-कदा बिजली भी कड़कने लगी। ऐसा लगने लगा तेज वर्षा होगी, किन्तु वह हल्की बूंदाबांदी के रूप में ही हुई। मौसम के परिवर्तन से वातावरण की तीव्र उष्णता नदारद हो गई। आचार्यप्रवर करीब ६.० कि.मी. का विहार कर अग्रमचेरी में स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

नवीन घोषित चतुर्मास

१. मुनिश्री किशनलालजी	सरदारशहर
२. मुनिश्री उदितकुमारजी	जयपुर
३. साध्वी रतिप्रभाजी	बाड़मेर

स्मृति संबल

- आमेट निवासी मुलुण्ड प्रवासी श्री मिश्रीमलजी हिरण (सुपुत्र स्व. श्री नाथुलालजी हिरण) का देहावसान हो गया। वे मिलनसार, कर्मठ एवं धुन के पक्के श्रावक थे। स्वस्थ रहने तक प्रतिदिन पांच सामायिक नियमपूर्वक करते थे। प्रतिवर्ष गुरुदेव के दर्शन सेवा का लाभ लेते थे। वे मुनि तत्वरूचिजी के संसारपक्षीय पिता थे। पूरे हिरण परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार है।

- असाढा निवासी जोधपुर प्रवासी श्री पुखराजजी भंसाली (सुपुत्र स्व. श्री मिश्रीमलजी भंसाली) का देहावसान हो गया। वे सरल स्वभावी एवं सेवाभावी श्रावक थे। प्रतिदिन एक सामायिक का नियम का पालन किया। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति अटूट आस्था वाले थे। पूरा भंसाली परिवार संघ सेवा में जागरूक रहता है।
- सिरीयारी निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री मीठालालजी आच्छा (सुपुत्र स्व. श्री पन्नालालजी आच्छा) का निधन हो गया। वे संघसमर्पित, दृढमनोबली एवं श्रमजीवी बारहव्रती एवं नशामुक्त श्रावक थे। स्वस्थता की अवस्था तक प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं चतुर्मासकाल में सेवा का लाभ लेते थे। कर्नाटक में चिकमंगलूर से सम्पूर्ण मलनाड क्षेत्र में प्रवासित चारित्रात्माओं के रास्ते की सेवा आदि में जागरुक रहते थे। तेरापंथ सभा चिकमंगलूर के मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि विभिन्न पदों पर रहते हुए अपनी सेवाएं दी। मुनिश्री दुलहराजजी, साध्वी अमितप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी दर्शनविभाजी, साध्वी मृदुलाश्रीजी, साध्वी लावण्यश्रीजी आदि चारित्रात्मा परिवार से संबंधित हैं। उनका सुपुत्र ललित आच्छा धर्मसंघ की अनेक गतिविधियों में संलग्न है। पूरा आच्छा परिवार संघ समर्पित है।
- सेखावास निवासी पाली प्रवासी श्री भीखमचन्द सुन्देचा (सुपुत्र स्व. श्री बगतावरमलजी सुन्देचा) का निधन हो गया। वे सरल, सादगी पसन्द एवं मधुर व्यवहार वाले श्रावक थे। प्रतिदिन दो सामायिक का एवं रात्रि भोजन परिवर्जन का त्याग जिंदगीभर निभाया। अनेक बार रास्ते की सेवा का लाभ भी लेते थे। अस्वस्थता की अवस्था में असहनीय वेदना को समभावपूर्वक सहन किया। पूरा सुन्देचा परिवार जागरूक परिवार है।
- पचपदरा निवासी श्री पुखराजजी छाजेड़ (सुपुत्र श्री दलीचंदजी छाजेड़) का निधन हो गया। वे प्रतिदिन एक सामायिक किया करते थे। आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं की सेवा शुश्रूषा में जागरूक रहते थे। ओसवाल समाज पचपदरा, तेरापंथ सभा पचपदरा, रानीवाड़ा तेरापंथ समाज आदि संस्थाओं के अध्यक्ष आदि के रूप में उनकी सेवाएं प्राप्त हुइ। पचपदरा मर्यादा महोत्सव के अवसर में भी आपने अपनी सेवाएं प्रदान की थी। अनेक राजनीतिक पार्टियों में भी सक्रिय रहते हुए सरपंच भी बने। पूरा छाजेड़ परिवार संघ समर्पित परिवार है।
- टमकोर निवासी खारुपेटिया प्रवासी श्री मानिकचंदजी कोठारी (सुपुत्र स्व. श्री शोभाचंदजी कोठारी) का देहावसान हो गया। वे सहृदय, मिलनसार, ईमानदार, सेवाभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाले श्रावक थे। उनकी छवि पूरे कस्बे में ईमानदार सेठ के रूप में थी। वे अपने पूरे परिवार को ईमानदारी का पाठ पढाते थे। परिवार से मुनि विमलबिहारी, रणजीतकुमारजी, साध्वी मानकंवरजी, मधुमतिजी, लाघवश्रीजी, शिवमालाजी, सूरजप्रभाजी, लावण्ययशाजी आदि चारित्रात्माएं संघ में साधनारत हैं। पूरा कोठारी परिवार संघ सेवा में समर्पित एवं जागरूक रहता है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला